एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सर्दियों में मुर्गियों की उचित देखभाल से पाये अधिक लाभ

(*डॉ. सुधीर कुमार[1] रावत एवं डॉ. ओ. पी. मौर्या[2])
[1]वैज्ञानिक, पशुपालन, कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस
[2]आर. एस. एम. पी. जी. कालेज, धामपुर
*sudhirkvk@gmail.com

ठंड के मौसम में मुर्गियों की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। मुर्गियां ठंडे तापमान के प्रति बहुत सहिष्णु होती है। मुर्गियां स्वाभाविक रूप से बहुत कठोर होती हैं और उनके पंखों की मोटी परतें उन्हें सर्दियों के ठंडे तापमान का सामना करने में मदद करती हैं। सर्दी के मौसम में जब तापमान बहुत कम हो जाता है तो मुर्गियों में अंडा उत्पादन की क्षमता घट जाती है। जैसे जैसे सर्दी बढ़ती है तो मुर्गी घरों का तापमान घट जाता है। मुर्गी के शरीर का सामान्य तापक्रम गर्मी और सर्दी के मौसम में 41.7 डिग्री सेल्सियस रहता है। जब सर्दी के मौसम में मुर्गी घरों का तापमान बहुत गिर जाता है और मुर्गी का तापमान सामान्य ही बना रहता है। उस समय मुर्गी के तापमान और बाहर के तापमान में अधिक अंतर होने के कारण मुर्गियों की उत्पादन क्षमता घट जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि सर्दियों में मुर्गी घरों में तापमान अधिक ना गिरने दिया जाए। सर्दियों में मुर्गियों की देखभाल के लिए लंबे, ठंडे महीनों के दौरान मौसम के खिलाफ सुरक्षा के लिए उचित आवास की आवश्यकता होती है और स्वस्थ झुंड को बनाए रखने के लिए भोजन और पीने के पानी पर अतिरिक्त ध्यान देना पड़ता है। एक आरामदायक वातावरण उत्पादकता बढ़ाने और स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करता है। ठंड के मौसम में मुर्गियों की देखभाल के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं –

मुर्गी आवास का प्रबंधन

जब अधिक ठंड हो तो मुर्गी घरों के किनारों और खिड़कियों को कवर करने के लिए बोरी, टाट या प्लास्टिक शीटिंग का उपयोग करें। जिससे मुर्गियों को ठंड, ठंडी हवा और बारिश से अतिरिक्त सुरक्षा मिलती रहे। एक बात का ध्यान रखना चाहिए – वेंटिलेशन। घरों में बैक्टीरिया की वृद्धि को रोकने के लिए ताजी हवा होनी चाहिए, जो विभिन्न रोगों का कारण बनती है। मुर्गी घर में फर्श को सर्दियों से पहले साफ और कीटाणुरहित करना चाहिए। आमतौर पर चूना के घोल का इस्तेमाल 10 लीटर पानी के अनुपात में 2 किलोग्राम किया जाता है। लेकिन कुछ पोल्ट्री किसान ब्लोटोरियस का भी इस्तेमाल करते हैं। मुर्गी घर की स्वच्छता सीधे पक्षियों के स्वास्थ्य से संबंधित है। बैक्टीरिया के संचय से परजीवी और अन्य बीमारियां होती हैं। डीप लीटर पद्धति में रखी मुर्गियों के बाड़े में जो भूसा, पीट, चूरा, घास या पुआल (लिटर) जमीन पर बिछा होता है वह सूखा होना चाहिए। उस पर पानी गिर जाये तो तुरन्त गीला बिछावन (लिटर) हटाकर वहां सूखा बिछावन डाल दें अन्यथा: मुर्गियों को ठंड लग सकती है। मुर्गियों को ठंड से बचाने के लिए बिस्तर की परत 10–15 सेमी तक होनी चाहिए। सर्दियों में बिछावन को प्रतिदिन उलट–पुलट कर देना चाहिए ताकि उसमें गांठे न पड़े। उसके बाद बिछावन की एक नई परत डाली जाती है। पुराना बिस्तर जिसे आप दूसरे कमरे में इस्तेमाल करते हैं। उसका इस्तेमाल नहीं किया करना चाहिए। बिछावन को ताजा और नया होना चाहिए। जब बिछावन में नमी के कारण सीलन आ रही हो तो उसे सुखाने के लिए सुपर फास्फेट को प्रयोग में लाया जाता है। 15 वर्ग फुट के बिछावन में 1 किलोग्राम सुपर फास्फेट मिला देना चाहिए। 100 वर्ग फुट के लिए 1 से 2 किलोग्राम बुझा हुआ चूना मिलाने से भी बिछावन में नमी की समस्या का समाधान हो सकता है। मुर्गियों

की बीट को बाहर करें। यदि कमरा गंदा है और मुर्गियों की बीट हर जगह हैं, तो इससे अंडे के उत्पादन में गिरावट और बीमारी भी हो सकती है। मुर्गियों की बीट जब लंबे समय तक रहती हैं तो वह विघटित हो जाती हैं, तो हानिकारक पदार्थ (अमोनिया) छोड़ती हैं। तो मुर्गियां साँस नहीं ले पाती। सप्ताह में एक बार कमरे को पूरी तरह से साफ कर दें। पीने वाले और फीडर को दैनिक रूप से साफ किया जाना चाहिए। यदि दीवारों में या कमरे के फर्श पर छेद हैं तो उन्हें पोटीन या कंकड़ के साथ मरम्मत की जानी चाहिए। इसके अलावा फर्श में छेद और अनाज की गंध के माध्यम से कृन्तकों आ सकते हैं जो रोगों के वाहक हैं।

कृत्रिम प्रकाश का प्रबंधन

मुर्गियों से सर्वाधिक उत्पादन लेने हेतु 44 डिग्री से 75 डिग्री फॅरनहीट (13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड) तापक्रम और आर्द्रता 70% आवश्यक होती हैं। अर्थात् उत्तर भारत में शीतऋतु में जब वातावरण का तापक्रम 13 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे चला जाता हैं तब अंडा उत्पादन पर विपरीत असर पड़ सकता हैं। मुर्गियों के चूजों को पालते समय उन्हें ब्रूडर के नीचे इस प्रकार तापमान देना चाहिए–

0 से 1 सप्ताह–35.0 डिग्री सेल्सियस
1 से 2 सप्ताह–32.5 डिग्री सेल्सियस
2 से 3 सप्ताह–29.4 डिग्री सेल्सियस
3 से 4 सप्ताह–26.7 डिग्री सेल्सियस
4 से 5 सप्ताह–23.9 डिग्री सेल्सियस
5 से 6 सप्ताह–21.1 डिग्री सेल्सियस

एक चूजे के ब्रूडर के नीचे 7 वर्ग इंच जगह होनी चाहिए और 2 वाट बिजली का बल्ब जलाना चाहिए। यदि चूजे बिजली के बल्ब के नीचे आकर इकट्ठे होते हैं तो समझ जाना चाहिए कि वह कम है। अधिक ताप देने के लिए या तो बल्बों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए या अधिक वाट का बल्ब प्रयोग में लाना चाहिए। यदि चूजे बल्ब से ब्रूडर से दूर भागते हैं तो यह समझ जाना चाहिए कि ब्रूडर के नीचे अवश्यकता से अधिक ताप है। इस हालात में ताप कम करने के लिए बल्बों की संख्या कम कर देनी चाहिए या कम वाट का बल्ब प्रयोग करना चाहिए।

अंडे का उत्पादन प्रकाश व्यवस्था पर निर्भर करता है। उचित रूप से व्यवस्थित प्रकाश सर्दियों में प्रजनन क्षमता को बनाए रखता है। अंडा उत्पादन बरकरार रखने हेतु तथा मुर्गियों को ठंड से बचाने हेतु बाड़े में बिजली के बल्ब लगाना जरूरी हैं। यदि मुर्गियां फुदकती हैं और कांपती हैं, तो यह एक निश्चित संकेतक है कि पक्षी ठंडे हैं। यदि युवा कोनों में बिखरे हुए हैं, पंख सीधे हैं, पैर फर्श पर नहीं है, जीभ बाहर फेंक दी है, तो यह इंगित करता है कि पक्षी बहुत गर्म हैं। सर्दियों के दिन छोटे होते हैं और रातें लंबी होती हैं। रोशनी उन्हें दिन का प्रकाश का समय मिलाकर 16 घंटों तक मिलना जरूरी हैं। 200 वर्गफीट जगह में कृत्रिम प्रकाश प्रदान करने हेतु 100 वॉट क्षमता के चार बिजली के बल्ब लगाना जरूरी हैं। रोशनी की सघनता एक जैसी रखने के लिए बल्बो को 5 फुट की ऊंचाई और 10–10 फुट की दूरी पर रखना चाहिए। ऐसा करने से मुर्गी घरों में रोशनी बराबर मिलेगी। अंधेरे में मुर्गियां दाना नहीं चुगती हैं और इससे अंडा उत्पादन में कमी आ जाती हैं।

सर्दियों में आहार और पानी का प्रबंधन

अच्छी स्थिति और स्वास्थ्य, साथ ही पक्षियों की उत्पादकता एक अच्छी तरह से बनाए गए आहार पर निर्भर करती है। ठंड के मौसम में मुर्गियां अतिरिक्त कैलोरी बर्न करती हैं और वे अपने शरीर को ईंधन देने और आंतरिक गर्मी पैदा करने के लिए अधिक भोजन खाती हैं। यदि आहार संतुलित ना हो तो उन्हें पूरी ऊर्जा नहीं मिल पाती। जब आहार में ऊर्जा की कमी हो तो मुर्गियां बहुत अधिक आहार लेने का प्रयत्न करती हैं जिससे उनकी पाचन क्रिया ठीक नहीं रहती और अंडे देने की क्षमता घट जाती है। इसलिए मुर्गियों का आहार संतुलित होना चाहिए जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज पदार्थ, विटामिन आदि सही अनुपात में हो। सर्दियों में, मुर्गियों को दिन में तीन बार खिलाया जाता है। सुबह और शाम को सूखा भोजन दिया जाता है, और दोपहर के भोजन के लिए एक मैश जोड़ा जाता है। रात

के खाने के लिए पक्षियों को साबुत अनाज दिया जाना चाहिए। साबुत अनाज को पचाने के लिए पूरी रात मुर्गियों को लग जाती है। जिसके दौरान वे काफी गर्म हो जाती है। ताजी सब्जियां, गीले मैश और उबले हुए दलिया बहुत प्रभावी है। सर्दियों में मुर्गियों के आहार में जौ या मकई के बीज रखना चाहिए। सबसे बड़ा लाभ सूरजमुखी के बीज केक से होता है। यह पोल्ट्री के लिए आवश्यक प्रोटीन और वसा का एक उत्कृष्ट स्रोत है। सर्दियों में मुर्गियों के लिए मुख्य भोजन पत्तेदार सब्जियां (आलू, बीट्स, गाजर और तोरी) है। पोल्ट्री ऐसी सब्जियों को अच्छी तरह से खाते हैं। शीतकालीन आहार में आवश्यक रूप से सुक्रोज, कैल्शियम और कैरोटीन शामिल होना चाहिए। इन तीन तत्वों में कैल्शियम आधारित आहार सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी कमी से अंडे का छिलका पतला हो जाता है और अधिक आसानी से फट जाता है। अंडे और हड्डियों को मजबूत करने के लिए पक्षियों को चाक, बजरी, छोटे गोले, कंकड़ रेत दिए जाते हैं। कैरोटीन– कटा हुआ गाजर के साथ पक्षियों के शरीर में जाएगा। सुक्रोज– उबले हुए आलू की मदद से शरीर में जाएगा। सर्दियों में मुर्गियों के पोषण में विटामिन और विटामिन कॉम्प्लेक्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विटामिन मुर्गियों की प्रतिरक्षा और उनके अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ मुर्गियों में अंडे का उत्पादन बढ़ा सकते हैं। वयस्क पक्षी प्रति दिन 130–150 ग्राम फीड का उपभोग करते हैं। यदि आप सही आहार का पालन नहीं करते हैं, जिस पर सर्दियों में पक्षियों की उत्पादकता निर्भर करती है, तो पालतू जानवर पंख खो देते हैं, टहलने के लिए बाहर नहीं जाते हैं, जिसके बाद वे अंडे देना बंद कर देते हैं या मर जाते हैं। मुर्गियों को पीने के लिए पानी साफ और ताजा देना चाहिए। पीने के कटोरे को हमेशा साफ रखना चाहिए। सर्दियों में मुर्गियों को ज्यादा ठंडा पानी ना पिलाये बल्कि गुनगुना पानी देना बेहतर होगा।

इस प्रकार से सर्दियों के मौसम में अगर उचित आवास, तापमान, प्रकाश, आहार आदि उपरोक्त बातों को ध्यान में रखा जाए तो हमारे मुर्गीपालक सर्दियों के मौसम में मुर्गीयों को ठंड से तो बचाएंगे ही और साथ ही अच्छा उत्पादन कर अधिक लाभ भी कमा सकेंगे।

E-Magazine for Agricultural Articles